श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकत्रिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।

दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥१॥

पदच्छेद— जयति ते अधिकम् जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वत्अत्र हि।
दयित दृश्यताम् दिक्षु तावकाः त्वयिधृतअसवः त्वाम् विचिन्वते ॥

शब्दार्थ—			
जयति	४. बढ़ गयी है	दयित	८. हे प्रियतम !
ते	१ आपके	दृश्यताम्	९. देखो
अधिकम्	३. अधिक	दिक्षु	१३. सभी दिशाओं में
जन्मना व्रज	२. जन्म से व्रज की महिमा	तावकाः	११. आपकी गोपिकायें
श्रयत	७. वास कर रही है	त्वयिधृतासवः	१०. आपके लिये प्राण धारण करनेवाली
इन्दिरा	५. तभी तो लक्ष्मी	त्वाम्	१२. आपको
शश्वत्अत्रहि।	६. निरन्तर यहाँ	विचिन्वते ॥	१४. खोजती भटक रही हैं

श्लोकार्थ—आपके जन्म से व्रज की महिमा अधिक बढ़ गयी है। तभी तो लक्ष्मी निरन्तर यहाँ वास कर रही हैं। हे प्रियतम ! देखो आपके लिये प्राण धारण करने वाली आपकी गोपिकायें आपको सभी दिशाओं में खोजती भटक रही हैं॥

द्वितीयः श्लोकः

शरदुदाशये साधुजातसत्सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा।

सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरदनिघ्नतो नेह किं वधः ॥२॥

पदच्छेद— शरत् उदाशये साधुजात सत्सरसिज उदर श्री मुषा दृशा।
सुरतनाथ ते अशुल्क दासिका वरदनिघ्नतः नेह किम् वधः ॥

शब्दार्थ—			
शरत्	१. शरदकालीन	सुरतनाथ	८. हे संभोग पति !
उदाशये	२. जलाशय में	ते अशुल्क	९. हम आपकी बिनामोल की
साधुजात	३. भली-भाँति उत्पन्न	दासिकाः	१०. दासी हैं
सत्सरसिज	४. सुन्दर कमल के	वरद	११. हे मनोरथपूर्ण करने वाले
उदर श्री	५. मध्यभाग की शोभा को	निघ्नतः	७. हमें घायल कर दिया है
मुषा दृशा।	६. चुराने वाले आपके नेत्रों ने	नेहकिम्वधः ॥	१२. क्या यह (नेत्रों से मारना) वध नहीं है

श्लोकार्थ—शरद्कालीन जलाशय में भली-भाँति उत्पन्न सुन्दर कमल के मध्यभाग की शोभा को चुराने वाले आपके नेत्रों ने हमें घायल कर दिया है। हे संभोग पति ! हम आपकी बिना मोल की दासी हैं। हे मनोरथ पूर्ण करने वाले ! क्या यह नेत्रों से मारना वध नहीं है॥

तृतीयः श्लोकः

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद् वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभयादृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥३॥

पदच्छेद— विषजल अप्ययात् व्याल राक्षसात् वर्षमारुतात् अनलात्।
वृषमय आत्मजात् विश्वतः भयात् ऋषभ ते वयम् रक्षिताः मुहुः ॥

शब्दार्थ—

विषजल	२.	यमुना के विषैले जल	वृषमय	९.	वृषभासुर और
अप्ययात्	३.	विषयक मृत्यु से	आत्मजात्	१०.	व्योमासुर आदि
व्याल	४.	अजगर रूपी	विश्वतः	११.	सब प्रकार के
राक्षसात्	५.	राक्षस से	भयात्	१२.	भयों से
वर्षमारुतात्	६.	इन्द्र की वर्षा-आँधी	ऋषभ	१.	हे पुरुष शिरोमणि !
वैद्युत	७.	बिजली और	ते वयम्	१३.	आपने हमारी
अनलात्।	८.	दावानल से	रक्षिता मुहुः ॥	१४.	बार-बार रक्षा की है

श्लोकार्थ—हे पुरुष शिरोमणि ! यमुना के विषैले जल विषयक मृत्यु से, अजगररूपी राक्षस से, इन्द्र की वर्षा, आँधी, बिजली और दावानल से, वृषभासुर और व्योमासुर आदि सब प्रकार के भयों से आपने हमारी ब.र-बार रक्षा की है ॥

चतुर्थः श्लोकः

न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥४॥

पदच्छेद— न खलु गोपिका नन्दनः भवान् अखिल देहिनाम् अन्तर आत्मदृक्।
विखनस अर्थितः विश्वगुप्तये सखे उदेयिवान् सात्वताम् कुले ॥

शब्दार्थ—

न	४.	नहीं हो, अपितु	विखनस	९.	ब्रह्माजी की
खलु	१.	निश्चय ही	अर्थितः	१०.	प्रार्थना पर
गोपिकानन्दनः	३.	यशोदानन्द नहीं	विश्व	११.	समस्त संसार की
भवान्	२.	तुम केवल	गुप्तये	१२.	रक्षा करने के लिये
अखिलदेहिनाम्	५.	समस्त शरीर धारियों के	सखे	८	हे सखे !
अन्तर	६.	हृदय में रहने वाले	उदेयिवान्	१४.	अवतीर्ण हुये हो
आत्मदृक्।	७.	उनके साक्षी और अन्तर्यामी हो	सात्वताम् कुले ॥	१३.	तुम यदुवंश में

श्लोकार्थ— निश्चय ही तुम केवल यशोदानन्दन ही नहीं हो। अपितु समस्त शरीरधारियों के हृदय में रहने वाले, उनके साक्षी और अन्तर्यामी हो। हे सखे ! ब्रह्माजी की प्रार्थना पर समस्त संसार की रक्षा करने के लिये तुम यदुवंश में अवतीर्ण हुये हो ॥

पञ्चमः श्लोकः

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् ।
करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥५॥

पदच्छेद— विरचित अभयम् वृष्णिधुर्य ते चरणम् ईयुषाम् संसृतेः भयात् ।
करसरोरुहम् कन्ति कामदम् शिरसि धेहि नः श्रीकर ग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

विरचित	५. देने वाले	कर	११. अपने कर
अभयम्	४. अभय	सरोरुहम्	१२. कमल को आप
वृष्णिधुर्य	१. हे यदुवंश शिरोमणि ! लोग	कान्त	८. हे प्रियतम ! समस्त
ते चरणम्	६. आपके चरणों की	कामदम्	९. कामनाओं को पूर्ण करने वाले
ईयुषाम्	७. शरण ग्रहण करते हैं (अतः)	शिरसि धेहि	१४. सिर पर रख दो
संसृतेः	२. जन्म मृत्युरूप संसार के	नः	१३. हमारे
भयात् ।	३. भय से डर कर	श्रीकर ग्रहम् ॥	१०. लक्ष्मी का हाथ पकड़ने वाले

श्लोकार्थ—हे यदुवंश शिरोमणि ! लोग जन्म-मृत्युरूप संसार के भय से डर कर अभय देने वाले आपके चरणों की शरण ग्रहण करते हैं । अतः हे प्रियतम ! समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले, लक्ष्मी का हाथ पकड़ने वाले अपने कर कमल को आप हमारे सिर पर रख दो ॥

षष्ठः श्लोकः

व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किङ्करीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय ॥६॥

पदच्छेद— व्रजजन आर्तिहन् वीर योषिताम् निज जनस्मय ध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत् किङ्करीः स्म नो जल रुह आननम् चारु दर्शय ॥

शब्दार्थ—

व्रजजन	१. व्रजवासियों के	स्मित ।	४. आपकी मधुर मुस्कान ही
आर्तिहन्	२. दुःख को दूर करने वाले	भज	११. हमसे प्रेम करो
वीर	३. वीर शिरोमणि	सखे भवत्	९. हे सखा ! हम तो आपकी
योषिताम्	६. हम गोपियों के	किङ्करीः स्म	१०. दासी हैं
निजजन	५. अपनी भक्ता	नो जलरुह	१२. हमें कमल के समान
स्मय	७. गर्व को	आननम् चारु	१३. अपने सुन्दर मुख का
ध्वंसन	८. नष्ट कर देने वाली है	दर्शय ॥	१४. दर्शन कराओ

श्लोकार्थ—व्रजवासियों के दुख को दूर करने वाले वीर शिरोमणि श्याम सुन्दर आपकी मधुर मुस्कान ही अपनी भक्ता हम गोपियों के गर्व को नष्ट कर देने वाली है । हे सखा ! श्याम सुन्दर ! हम तो आपकी दासी हैं । हम से प्रेम करो । हमें कमल के समान अपने सुन्दर मुख का दर्शन कराओ ॥

सप्तमः श्लोकः

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥७॥

पदच्छेद— प्रणत देहि नाम् पापकर्शनम् तृणचर अनुगम् श्री निकेतनम् ।
फणिफण अर्पितम् ते पद अम्बुजम् कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥

शब्दार्थ—

प्रणत	२.	शरणागत	फणिफण	६.	साँप के फणों पर
देहिनाम्	३.	प्राणियों के	अर्पितम्	१०.	रखे गये उन्हीं चरणों को
पापकर्शनम्	४.	पापों को नष्ट करने वाले	ते पद अम्बुजम्	१.	आपके चरण कमल
तृणचर	५.	बछड़ों के	कृणु	१२	रखो और
अनुगम्	६.	पीछे चलने वाले तथा	कुचेषु नः	११.	हमारे स्तनों पर
श्री	७.	शोभा के	कृन्धि	१४.	शान्त करो
निकेतनम् ।	८.	धाम हैं	हृच्छयम् ॥	१३.	हमारे हृदय की ज्वाला को

श्लोकार्थ—आपके चरण कमल शरणागत प्राणियों के पापों को नष्ट करने वाले, बछड़े के पीछे चलने वाले तथा शोभा के धाम हैं। साँप के फणों पर रखे गये उन्हीं चरणों को हमारे स्तनों पर रखो और हमारे हृदय की ज्वाला को शान्त करो ॥

अष्टमः श्लोकः

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥८॥

पदच्छेद— मधुरया गिरा वल्गु वाक्यया बुध मनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीः इमाः वीर मुह्यतीः अधर सीधुना आप्याययस्व नः ॥

शब्दार्थ—

मधुरया	६.	तुम्हारी मधुर	विधिकरीः	१०.	आज्ञाकारिणी दासी बन गईं हैं
गिरा	७.	वाणी से	इमाः	६.	हम आपकी
वल्गु	२.	सुन्दर	वीर	११.	हे दान वीर
वाक्यया	३.	नयनों के कारण	मुह्यतीः	८.	मोहित होकर
बुध	५.	विद्वानों को	अधर	१२.	अपने अधरों का
मनोज्ञया	४.	आनन्द देने वाली	सीधुना	१३.	दिव्य अमृत रस
पुष्करेक्षण ।	१.	हे कमल नयन !	अप्याययस्व नः ॥	१४.	पिलाकर हमें कृतार्थ करो

श्लोकार्थ—हे कमलनयन ! सुन्दर नयनों के कारण विद्वानों को आनन्द देने वाली तुम्हारी मधुर वाणी से मोहित होकर हम आपकी आज्ञाकारिणी दासी बन गईं हैं। हे दानवीर ! अपने अधरों का दिव्य अमृतरस पिलाकर हमें कृतार्थ करो ॥

नवमः श्लोकः

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥९॥

पदच्छेद— तव कथा अमृतम् तप्त जीवनम् कविभिः ईडितम् कल्मषअपहम् ।
श्रवण मङ्गलम् श्रीमद् आततम् भुवि गृणन्ति ते भूरिदाः जनाः ॥

शब्दार्थ—

तव कथा	१. आपकी लीला कथा	श्रवण	८. श्रवण मात्र से ही
अमृतम्	२. अमृत स्वरूप है	मङ्गलम्	९. परम कल्याण को देने वाली है
तप्त	३. विरह से सताये लोगों का	श्रीमद्	१०. परम सुन्दर और
जीवनम्	४. जीवन सर्वस्व है	आततम्	११. अति विस्तृत है
कविभिः	५. भक्त कवियों ने	भुवि	१२. पृथ्वी पर जो इसका
ईडितम्	६. उसका गान किया है वे	गृणन्ति ते	१३. गान करते हैं वे
कल्मषअपहम् ।	७. पाप ताप को नष्ट करने वाली	भूरिदाःजनाः ॥	१४. सबसे बड़े दाता हैं

श्लोकार्थ—आपकी लीला कथा अमृत स्वरूप है। विरह से सताये लोगों का जीवन सर्वस्व है। भक्त कवियों ने उसका गान किया है। यह पाप-ताप को नष्ट करने वाली है। श्रवण मात्र से ही परम कल्याण को देने वाली है। परम सुन्दर और अति विस्तृत है। पृथ्वी पर जो इसका गान करते हैं, वे लोग सबसे बड़े दाता हैं।

दशमः श्लोकः

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥१०॥

पदच्छेद— प्रहसितम् प्रिय प्रेम वीक्षणम् विहरणम् च ते ध्यान मङ्गलम् ।
रहसि संविदः याः हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्तिहि ॥

शब्दार्थ—

प्रहसितम्	३. हँसना	रहसि	८. तुमने एकान्त में
प्रिय	१. हे प्यारे ! श्याम सुन्दर	संविदः	१०. ठिठोलियाँ की हैं
प्रेम	४. प्रेमपूर्वक	याः हृदिस्पृशाः	९. हमसे जो हृदय स्पर्शी
वीक्षणम्	५. तिरछी चितवन से देखना	कुहक	११. हमारे कपटी मित्र
विहरणम्	६. विहार करना आदि का	नः	१२. वे सब हमारे
च ते	२. तुम्हारा	मनः	१३. मन को
ध्यानमङ्गलम् ।	७. ध्यान भी परम मङ्गल कारक है	क्षोभयन्ति हि ॥	१४. क्षुब्ध किये देती हैं

श्लोकार्थ—हे प्यारे श्याम सुन्दर, तुम्हारा हंसना ! प्रेमपूर्वक तिरछी चितवन से देखना, विहार करना आदि का ध्यान भी परम मङ्गलकारक है। तुमने एकान्त में हमसे जो हृदय स्पर्शी ठिठोलियाँ की हैं, हमारे कपटी मित्र, वे सब हमारे मन को क्षुब्ध किये देती हैं ॥

एकादशः श्लोकः

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥११॥

पदच्छेद— चलसि यद् व्रजात् चारयन् पशून् नलिन सुन्दरम् नाथ ते पदम् ।
शिलतृण अङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलताम् मनः कान्त गच्छति ॥

शब्दार्थ—

चलसि	७.	निकलते हो तब	शिल	६.	आपके चरण कङ्कड़
यद्	४.	जब तुम	तृणअङ्कुरैः	१०.	तिनके और कुश-काँटे गड़ जाने से
व्रजात्	६.	व्रज से	सीदतीति	११.	कष्ट पाते होंगे
चारयन् पशून्	५.	गौओं को चराने के लिये	नः	१२.	ऐसा सोच कर हमारा
नलिन सुन्दरम्	३.	कमल से भी सुन्दर हैं	कलिलताम् मनः	१३.	मन दुःखी
नाथ	१.	हे प्यारे स्वामी !	कान्त	८.	हे प्रियतम !
ते पदम् ।	२.	तुम्हारे चरण	गच्छति ॥	१४.	हो जाता है

श्लोकार्थ—हे प्यारे स्वामी ! तुम्हारे चरण कमल से भी सुन्दर हैं । जब तुम गौओं को चराने के लिये व्रज से निकलते हो तब हे प्रियतम ! आपके चरण कङ्कड़, तिनके और कुश काँटे गड़ जाने से कष्ट पाते होंगे । ऐसा सोचकर हमारा मन दुःखी हो जाता है ॥

द्वादशः श्लोकः

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥१२॥

पदच्छेद— दिन परिक्षये नील कुन्तलैः वनरुह आननम् बिभ्रत् आवृतम् ।
घन रजस्वलम् दर्शयन् मुहुः मनसि नः स्मरम् वीर यच्छसि ॥

शब्दार्थ—

दिन	१.	दिन के	घन	९.	गऊओं के खुरों से उड़ी हुई
परिक्षये	२.	ढलने पर वन से लौटते समय	रजस्वलम्	१०.	धूली से मण्डित
नीलकुन्तलैः	३.	नीली-नीली अलकों से	दर्शयन् मुहुः	११.	आपका मुख बार-बार देखकर
वनरुह	५.	आपका कमल के समान	मनसि नः	१२.	हमारे मन में
आननम्	६	मुख	स्मरम्	१३.	मिलन की आकांक्षा
बिभ्रत्	७.	सुशोभित होता है	वीर	८.	हे वीर प्रियतम् !
आवृतम् ।	४.	घिरा हुआ	यच्छसि ॥	१४.	उत्पन्न करते हों

श्लोकार्थ—दिन के ढलने पर वन से लौटते समय नीली-नीली अलकों से घिरा हुआ आपका कमल के समान मुख सुशोभित होता है । हे वीर प्रियतम ! गऊओं के खुरों से उड़ी हुई धूली से मण्डित आपका मुख बार-बार देखकर हमारे मन में मिलन की आकांक्षा उपन्न करते हो ॥

त्रयोदशः श्लोकः

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।
चरणपङ्कजं शन्तमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥१३॥

पदच्छेद-- प्रणत कामदम् पद्मज अर्चितम् धरणि मण्डनम् ध्येयम् आपदि ।
चरण पङ्कजम् शन्तमम् चते रमण नः स्तनेषु अर्पय आधिहन् ॥

शब्दार्थ—

प्रणत	१. शरणागत भक्तों की	चरणपङ्कजम्	२. आपके चरण कमल
कामदम्	४. अभिलाषा पूर्ण करने वाले	शन्तमम्	११. परमकल्याणमय
पद्मजार्चितम्	१. लक्ष्मी जी द्वारा सेवित	च ते	१२. अपने उन्हीं चरणों को
धरणि	७. पृथ्वी के	रमण	९. हे प्रियतम !
मण्डनम्	८. अलङ्करण स्वरूप हैं	नः स्तनेषु	१३. तुम हमारे वक्षः स्थल पर
ध्येयम्	६. चिन्तन करने योग्य तथा	अर्पय	१४. स्थापित करो
आपदि ।	५. आपत्ति के समय	आधिहन् ॥	१०. मन की व्यथा को नष्ट करनेवाले

श्लोकार्थ—लक्ष्मी जी द्वारा सेवित आपके चरण कमल शरणागत भक्तों की अभिलाषा पूर्ण करने वाले, आपत्ति के समय चिन्तन करने योग्य तथा पृथ्वी के अलङ्करण स्वरूप हैं । हे प्रियतम ! मन की व्यथा को नष्ट करने वाले परमकल्याणमय अपने उन्हीं चरणों को तुम हमारे वक्षः स्थल पर स्थापित करो ।

चतुर्दशः श्लोकः

सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥१४॥

पदच्छेद— सुरत वर्धनम् शोक नाशनम् स्वरित वेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतरराग विस्मारणम् नृणाम् वितर वीर नः ते अधर अमृतम् ॥

शब्दार्थ—

सुरत	२. मिलन की आकांक्षा को	इतरराग	१०. अन्य सांसारिक आसक्तियों को
बर्धनम्	३. बढ़ाने वाला	विस्मारणम्	११. विस्मृत कराने वाला
शोक	४. शोक-सन्ताप को	नृणाम्	९. मनुष्यों में
नाशनम्	५. नष्ट करने वाला	वितर	१४. पिलाइये
स्वरित	६. गाने वाली	वीर	१. हे वीर शिरोमणि !
वेणुना सुष्ठु	७. बाँसुरी के द्वारा भली-भाँति	नः ते	१२. हमें आप अपना वही
चुम्बितम् ।	८. चुम्बित तथा	अधर अमृतम् ॥	१३. अधररूपी अमृत

श्लोकार्थ—हे वीर शिरोमणि ! मिलन की आकांक्षा को बढ़ाने वाला, शोक-सन्ताप को नष्ट करने वाला, गाने वाली बाँसुरी के द्वारा भली-भाँति चुम्बित तथा मनुष्यों में अन्यसांसारिक आसक्तियों को विस्मृत कराने वाला, हमें आप अपना वही अधररूपी अमृतपिलाइये ॥

पञ्चदशः श्लोकः

अटति यद् भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ॥१५॥

पदच्छेद— अटति यत् भवान् अह्निकाननम् त्रुटिः युगायते त्वाम् अपश्यताम् ।
कुटिल कुन्तलम् श्री मुखम् च ते जडः उदीक्षताम् पक्ष्मकृत् दृशाम् ॥

शब्दार्थ—

अटति	३.	विचरण करते हैं तो	कुटिलकुन्तलम्	६.	घुँघराली अलकों से
यत्भवान्	१.	आप जो	श्रीमुखम्	१०.	सुशोभित मुख
अह्निकाननम्	२.	दिन में वन में	च ते	८.	और अथवा
त्रुटि	६.	हमें एक क्षण	जडः	१४.	हमें मूर्ख लगता है
युगायते	७.	युग के समान हो जाता है	उदीक्षताम्	११.	देखते हुए
त्वाम्	४.	आपको	पक्ष्मकृत्	१३.	पलकों को
अपश्यताम् ।	५.	देखे बिना	दृशाम् ॥	१२.	नेत्रों की

श्लोकार्थ—जो आप दिन में वन में विचरण करते हैं । तो आपको देखे बिना हमें एक क्षण युग के समान हो जाता है । अथवा घुँघराली अलकों से सुशोभित मुख देखते हुए नेत्रों की पलकों को बनाने वाला (ब्रह्मा) हमें मूर्ख लगता है ॥

षोडशः श्लोकः

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः ।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥१६॥

पदच्छेद— पति सुत अन्वय भ्रातृ बान्धवान् अति विलङ्घ्य ते अन्ति अच्युत आगताः ।
गति विदः तव उद्गीत मोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेत् निशि ॥

शब्दार्थ—

पति सुत	२.	हम अपने पति पुत्र	गतिविदः	६.	गति समझ कर
अन्वयः	४.	कुल परिवार का	तवउद्गीत्	८.	हम आपकी मधुर गान की
भ्रातृबान्धवान्	३.	भाई-बन्धु और	मोहिताः	१०.	मोहित हैं
अतिविलङ्घ्य	५.	त्याग करके	कितवः	११.	हे कपटी ! ऐसी
ते अन्ति	६.	तुम्हारे पास	योषितः	१३.	युवतियों को
अच्युत	१.	हे श्याम सुन्दर !	कस्त्यजेत्	१४.	तुम्हारे बिना कौन छोड़ सकता है
आगताः ।	७.	आयी हैं	निशि ॥	१२.	रात्रि के समय

श्लोकार्थ—हे श्याम सुन्दर ! हम अपने पति, पुत्र, भाई, बन्धु और कुल-परिवार का त्याग करके तुम्हारे पास आयी हैं । हम आपकी मधुर गान की गति समझ कर मोहित हैं । हे कपटी ! ऐसी रात्रि के समय युवतियों को तुम्हारे बिना कौन छोड़ सकता है ॥

सप्तदशः श्लोकः

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसितानन्दं प्रेमवीक्षणम् ।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥१७॥

पदच्छेद— रहसि संविदम् हृच्छय उदयम् प्रहसित आननम् प्रेम वीक्षणम् ।
बृहत् उरः श्रियः वीक्ष्य धाम ते मुहुः अति स्पृहा मुह्यते मनः ॥

शब्दार्थ—

रहसि	१.	एकान्त में	बृहत् उरः	१०.	विशाल वक्षः स्थल को
संविदम्	२.	मिलन की आकांक्षा	श्रियः	८.	लक्ष्मी जी का
हृच्छय	३.	और प्रेमभाव को	वीक्ष्य	११.	देखकर
उदयम्	४	जगाने वाली बातें करते थे	धाम ते	९.	निवास स्थान तुम्हारे
प्रहसित	६	हँसते हुये	मुहुः अतिस्पृहा	१३.	बार-बार लालसा बढ़ रही है
आननम्	७.	मुखारविन्द तथा	मुह्यते	१४.	और वह मुग्ध होता जा रहा है
प्रेमवीक्षणम् ।	५.	प्रेम भरी चितवन और	मनः ॥	१२.	हमारे मन में

श्लोकार्थ—एकान्त में मिलन को इच्छा और प्रेम भाव को जगाने वाली बातें करते थे । प्रेम भरी चितवन और हँसते हुये मुखारविन्द तथा लक्ष्मी जी का निवास स्थान तुम्हारे विशाल वक्षः स्थल को देखकर हमारे मन में बार-बार लालसा बढ़ रही है । और वह मुग्ध होता जा रहा है ॥

अष्टादशः श्लोकः

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् ।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥१८॥

पदच्छेद— व्रज वनौकसाम् व्यक्तिः अङ्ग ते वृजिनहन्त्री अलम् विश्वमङ्गलम् ।
त्यज मनाक् च नः त्वत् स्पृहा आत्मनाम् स्वजन हृत् रुजाम् यत् निषूदनम् ॥

शब्दार्थ—

व्रज वनौकसाम्	३.	व्रजवनवासियों के	त्यजमनाक्	१०.	थोड़ी सी ऐसी ओषधि दे दो
व्यक्तिः	२.	यह अभिव्यक्ति	च नः त्वत्	८.	और हमारा हृदय तुम्हारे प्रति
अङ्ग ते	१.	हे प्यारे श्याम सुन्दर तुम्हारी	सपृहाआत्मानम्	९.	लालसा से भर रहा है अतः
वृजिन	४.	दुःख ताप को	स्वजनहृत्	१२.	निजजनों के हृदय
हन्त्री	५.	नष्ट करने वाली और	रुजाम्	१३.	रोग को
अलम्	६.	सम्पूर्ण	यत्	११.	जो
विश्वमङ्गलम् ।	७.	विश्व का मङ्गल करने के लिये है	निषूदनम् ॥	१४.	सर्वथा निर्मूल कर दो

श्लोकार्थ—हे प्यारे श्याम सुन्दर ! तुम्हारी यह अभिव्यक्ति व्रज वनवासियों के दुःख-ताप को नष्ट करने वाली और सम्पूर्ण विश्व का मङ्गल करने के लिये है । और हमारा हृदय तुम्हारे प्रति लालसा से भर रहा है । अतः थोड़ी सी ऐसी ओषधि दे दो । जो निजजनों के हृदय रोग को सर्वथा निर्मूल कर दे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रियदधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥१९॥

पदच्छेद—
यत् ते सुजात चरण अम्बुरुहम् स्तनेषु,
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेन अटवीम् अटसि तत् व्यथते न किंस्वित्,
कूर्प आदिभिः भ्रमति धीः भवत् आयुषाम् नः ॥

शब्दार्थ—

यत्	२.	क्योंकि	तेन	१३.	उन्हीं कोमल चरणों से तुम
ते	३.	तुम्हारे	अटवीम्	१५.	वन में
सुजात	६.	सुकुमार हैं	अटसि	१६.	विचरण करते हो तो
चरण	४.	चरण	तत्	१२.	तब
अम्बुरुहम्	५.	कमल से भी	व्यथते	१७.	हमारा मन व्यथित
स्तनेषु	८.	स्तनों पर	न किंस्वित्	१८.	क्यों नहीं होगा हमारी
भीताः	११.	डर रही हैं	कूर्प आदिभिः	१४.	कङ्कड़ पत्थर आदि से युक्त
शनैः	९.	उन्हें धीरे-धीरे	भ्रमति	२०.	भ्रमित हो रही हैं क्योंकि
प्रिय	१.	हे प्राण प्यारे ! श्यामसुन्दर	धीः	१९.	बुद्धि भी
दधीमहि	१०.	रखते हुये भी	भवत्	२२.	आपके लिये ही है
कर्कशेषु।	७.	हम अपने कठोर	आयुषाम् नः ॥	२१.	हमारा जीवन तो

श्लोकार्थ—हे प्राणप्यारे ! श्यामसुन्दर ! क्योंकि तुम्हारे चरण कमल से भी सुकुमार हैं। हम अपने कठोर स्तनों पर उन्हें धीरे-धीरे रखते हुये भी डर रही हैं। तब उन्हीं कोमल चरणों से तुम कङ्कड़ पत्थर आदि से युक्त वन में विचरण करते हो। तो हमारा मन व्यथित क्यों नहीं होगा। हमारी बुद्धि भ्रमित हो रही है। क्योंकि हमारा जीवन तो आपके लिये ही है ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां गोपीगीतं नाम एकत्रिंशः अध्यायः ॥३१॥